ANURAAG

A COLLECTION OF HINDI SHORT STORIES

By Dr Ram Lakhan Prasad

Aaja Ji

Aaji Ji

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

Pitaa Ji

MaataaJi

अनुराग

छोटी कहानियों का
गुलदस्ता

मेरी प्राणप्रिये सरोज के
मधुर याद में समर्पण

राम लखन प्रसाद
के कलम का कमाल

हमारे सभी हिंदी और अंग्रेजी पुस्तकें आप को ऑनलाइन पढ़ने को मिलेंगी अगर आप गूगल पर खोज करेंगे |

मैं और मेरी अर्धांगनी पिछले तीस वर्षों से अपने अपने लेखनियों को सुचारु रूप से चलाने की कोशिश कर रहे हैं और हम को पाठकों से बहुत ही प्रोत्साहन और मान मिलता रहा है | हमारे रचनाओं को पढ़ने और हम को प्रोत्साहन देने के लिए हम आप सब के आभारी हैं |

इन कहानियों के सभी पात्र, स्थान और विषय सत्य लगते हुए भी किसी जीवित या मृतक आत्मा से सम्बन्ध नहीं रखती है | स्थान और विषयों की चर्चा आकस्मिक,वृतांत्रिक, कल्पित और अनायासिक है |

इस पुस्तक के प्रतिलिप्यधिकारी और सर्वाधिकारी -
डाक्टर राम लखन प्रसाद हैं |
©

संपर्क करने का पता: ७६ सरोज निवास, बेलबावरी, क्वींसलैंड ऑस्ट्रेलिया
०७ ३२०२८५६४
srlprasad40@hotmail.com

Printers
Clark & McKay
Brisbane

मेरे कलम से निकली अनगिनत और चमकती चिंगारियां जो कहानियां बन कर इन सुनहरे पृष्ठों पर चीख और चमक रहीं हैं वो सब मेरे कल्पना की कीर्ति है |

मैं ने अपने प्रकाशन को अनुराग नाम क्यों दिया है ? मेरे लिए अनुराग बहुत मतलब रखती है और मेरे सभी कहानियों में इस का कहीं न कहीं प्रदर्शन है | अनुराग एक त्याग है, प्यार है, प्रीती है और मोहब्बत है | इस शब्द में ममता, भक्ति, निष्ठा, प्रेरणा और लगन भरे हैं | भ्रातृभाव , समर्पण और भेंट तो इस शब्द के मूल आधार हैं | इतना होते हुए हम क्यों नहीं अपने पुस्तक को इसी नाम से पुकारें ?

मेरी यह रचना पाठकगण के
दीदार की एक अटूट आकांक्षा को जुगोए तड़प रहीं हैं |
पाठकों के मन की तृप्ति निश्चय है | खुद पढ़िए और दूसरों को पढ़ कर सुनाईये |
हमारी मातृ भाषा हिंदी की जय हो |

भूमिका

अनुराग --डॉक्टर श्री राम लखन प्रसाद की एक अनुपम प्रस्तुति। इस की भूमिका लिखने का जो सौभाग्य मुझे प्राप्त हुवा है उसके लिए मैं मास्टरजी के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ। 'मास्टर जी' कह कर उनको सम्बोधित करने का मेरा अभिप्राय यह है की यह शब्द उनके लिए उचित है क्योंकि हम फ़ीजी वासियों ने हमेशा अपने गुरु जानो को यही कहा है।

अनुराग रचते समय वास्तव में मास्टर जी ने अपने दिल की गहराई से शब्दों का चयन किया है। उनकी यही भावना से प्रभावित होकर उनकी रचनाओं को बार बार पढ़ने की उत्कंठा जाग जाती है। अनुराग में मास्टर जी ने केवल अतीत ही नहीं अपितु, वर्तमान और भविष्य की उन परिस्थिथीयों को सामने लाया है जिसका सम्बंध हमारे समाज के दैनिक जीवन से है। उनके लेखन की शैली केवल समाज की अच्छाइयाँ ही नहीं बल्कि हमारे समाज में फैली हुई कुरीतियों और अंधविश्वास के प्रति हमको सचेत करने का उत्तम प्रयास है।

'' त्याग '' में जिस तरह से पारिवारिक उतार-चढ़ाओ को मास्टर जी ने प्रस्तुत किया है वो हमारे समाज की वर्तमान की स्तिथि है। वो भविष्य का वह दृश्य है जो ग़ौर करने योग्य है। यूँ कहिए की मास्टर जी ने अपनी नज़रिया से हम सबको हमारा ही भविष्य दिखाया है। 'प्रीत करे सुख होए' में जयश्री के मन की बात का उल्लेख, महिलाओं के जीवन में घटित घटनाओं और प्रेम के स्वरूप का प्रदर्शन करता है। अपनी इस प्रस्तुतीकरण में मास्टर जी ने साहित्य में प्रयुक्त करुण, श्रृंगार तथा हास्य जैसे रसों को भी व्यक्त किया है जो इस कृति को इस आधुनिक ज़माने में नवजीवन प्रदान करता है।

मास्टर जी की प्रेरणा उनकी स्वर्गवासी पत्नी रही हैं। मैं उनके प्रति भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ क्योंकि उन्होंने एक व्यक्ति को अपने मन की बात दूसरों तक पहुँचाने का वह गौरव प्रदान किया जो अति सराहनिये है। जीवन संगिनी के बिछड़ जाने पर आदमी यह तो टूट जाता है यह फिर भटक जाता है लेकिन मास्टर जी ने अपनी इस परिस्थिति को अपनी जीवन गाथा का रूप दे दिया है।

आज के इस युग में मास्टर जी जैसे एक स्थानिए लेखक ने ''अनुराग '' के द्वारा हम हिन्दी प्रेमियों के मन में साहित्य के प्रति जो उत्साह जगाई है, उसके किए उन्हें कोटिश धन्यवाद। एक लेखक को प्रसन्नता और संतोष तब मिलता है जब उनकी रचनाएँ पढ़ी जाती है। यूँ मानो उसको उसकी मेहनत का फल मिल जाता है। आशा है कि पाठकगण डॉक्टर राम लखन प्रसाद जी की इस रचना का आनन्द उठाएँगे।

शुभ और मंगलकामनाएँ। -हेमन्त विमल शर्मा , मेलबर्न।

इस ग्रन्थ की गाथा

इस कहानियों के गुलदस्ता की एक अपनी ही राम कहानी है | इस को कह कर ही आगे की कथा कहना उचित और उपयुक्त होगा | अपने कॉलेज के दिनों से ही हम दोनों प्राणी कई प्रकार के लेख लिखने के लिए उतावले रहते थे और जैसे जैसे समय का चक्र चलता रहा वैसे वैसे हमारी हुनर भी इस तरफ बढ़ती ही गयी | इस संग्रह में जितने भी लधु कथा हैं उनमे मेरे अर्धांगनी सरोज देवी का बड़ा ही योगदान रहा है | बिना उनके प्रोत्साहन, प्यार और भक्ति के हम इस स्थान पर कदापि नहीं पहुँच पाते | उनका मैं कोटि कोटि बन्दना करता हूँ और उनके कई सुखद तथा प्रिये यादों को लेकर ही इस योजना का श्रीगणेश कर रहा हूँ |

आज जब मेरी प्रियतम मेरे साथ नहीं हैं तो मैं उन के ही मधुर याद में इन सब गाथाओं को लिखने की साहस किया है | आज एक शुभ दिन है जब मुझे इन रहस्य भेद कहानियों को लिखने का मन हुवा | आज मैं ऐसी कहानियों को लिखना चाहता था जो कई रहस्यों से भरी हो और पाठकगण पढ़ कर मुग्ध हो जाएँ |

जैसे ही लिखने का ख़याल आया वैसे ही सरोज देवी के कृपा से मन में शब्दों का फौहारा हिलोरे लेने लगा | मेरे हाँथ अपने आप ही कलम उठाने को मजबूर हो गए | मेरे मन की व्यग्रता को मेरी अर्धांगनी ने और मेरे कलम ने और भी मजबूत बना दिया जब वह स्वयं ही अपनी गति तेज कर के चलने लगी | ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे अगर अपना हाँथ हटा लूँ तो भी शायद मेरी कलम खुद ही उनके कृपा से चलती ही रहे | परन्तु ऐसा तो सिर्फ सपने में ही संभव है यर्थात में नहीं |

इसी तरह के भावनाओं को लेकर मैं अपने कहानियों को रचता रहता हूँ | आज मेरा यह सौभागय है कि मैं भी एक साधारण लेखक का पार्ट अदा कर रहा हूँ | आप सब की सहयोग की आकांक्षा लिए आगे बढ़ने की साहस किया है | सहारा देते रहिएगा |

आप का शुभचिंतक, राम लखन प्रसाद | - May 2016

मेरे दो शब्द

इस छोटी कहानियों के गुलदस्ता में मैं ने कई सुन्दर फूलों को सुसज्जित किया है | इन की महक, चहक, कलरव और आभास पाठकगण को तब होगा जब वे इस सजी हुयी माला को पठन पाठन करने के बाद धारण करेंगे | हम ने इन कहानियों को चुन चुन कर प्रकाशित किया है जिससे पढ़ने वालों के दिल और दिमाग में ऐसी चेतना और भावना भर जाए जो उन के लिए और उनके सभी अपनों के लिए जीवन भर का साथी और सारथी बन जाएँ |

कहानी लिखते समय मेरे जैसे लेखक को उन के पाठकगण का ख्याल रखना पड़ता है कि कहीं उनको कोई व्यक्तिगत ठेस न पहुँच जाए | इस लिए हम ने कहानी के सभी वसूलों को मध्यनज़र कर के ही इन की रचना की है |

मेरी सभी लघु-कथायें, 'गागर में सागर' भर देने वाली साधन और साधना है। लघुकथा एक साथ लघु भी है, और कथा भी। यह न लघुता को छोड़ सकती है, न कथा को ही।हम ने इन दोनों ख़ास विषयों का सम्मिश्रण करने की कोशिश की है और इस सफलता को अपने पाठकों के समक्ष प्रदर्शित कर रहा हूँ | आशा है आप सब इन कहानियों को उतना ही प्रेम और इज़्ज़त देंगे जितना हम ने इन पर अपना समय, प्यार और हुनर दर्शाया है |

हमारे लधु कथाओ के पात्र, पतिस्तिथि, व्यवस्था, विषय, प्रसंग और षड्यंत सब एक आम उपन्यास के तरह काल्पनिक या गढ़ी बात तो हैं लेकिन उन में कहीं न कही पाठक को एक सामाजिक और सार्वजनिक सच्चाई की झलक जरूर दिखाई देगी | मेरी भावनाएं आप मानव के ही तरह बहते चले गए थे जब हम अपने कल्पना और भाषण के प्रवाह में शब्दों को सुशोभित कर के इन कहानियों को रचता रहा |

हाँ हम ने कोशिश कर के व्याकरण की संरचना को भी ध्यान में रक्खा था | शायद इसीलिए इन कहानियों में जान, ईमान और अभिमान भर गयी है | दो शब्द बहुत हो गयी चलिए अब कहानियों को पढ़ते हैं |

कहानियों का सारांश

इन कहानियों के संग्रह में पंद्रह लघु लेख सामिल किये गए हैं जिनका सारांश कुछ ऐसा है |

- **त्याग** में हम एक त्यागी के उभरते रूप का दर्शन करते हैं और यह महसूस करते हैं कि त्याग मनुष्यता का एक बहुत ख़ास और गहरा भाव है | एक त्यागी बनना आम लोगों के बस कि बात नहीं है |
- इस संसार में सिर्फ एक प्रतिशत पदच्युत मनुष्य जानवरों से भी बदत्तर करम करने पर उतर आएं हैं | उनके दुर्व्योहर को सहन करना हम साधारण इंसानो के लिए लोहे के चने चबाने के जैसे हैं | **करीना** ने इस कथा में अपना **कमाल** कर के दिखाया है और एक धमाल उत्पन्न कर के मोहनी युग का प्रस्ताव रखा है |
- दूसरे तरफ हम देखते हैं कि प्यार मोहब्बत और दिलों का लगावो ही जीवन में हम सब को सही रूप से जीने का सुझावों देते हैं | इस कथा में **प्रीत की रीत** दर्शायी गयी है |
- अनुशासनहीनता और भ्रस्टाचार इस संसार में प्रचण्ड आग या तूफ़ान की तरह फ़ैल रही है | इस कहानी में **गुलाबो के कौशल** से इस देश के द्रोहियों का भी खात्मा होता है |
- इस संसार में हम सब तकदीर और तत्वीर पर अक्सर बहस किया करते हैं तो अब इस कहानी में पढ़ लीजिए की **तकदीर की लकीरों** में क्या क्या लिखे होते हैं और उन को कैसे और कब बदला जा सकता है | या जब नहीं तो क्यों नहीं?
- भविष्य में क्या होने वाला है यह कौन जानता है पर आज नहीं तो कल तो हमारे जीवन में कोई अच्छाइयां जरूर आजाएगी | कम से कम हम इस विश्वास को ले कर आराम से आगे बढ़ सकते हैं |

इस का रूप पढ़िए इस कहानी में जिस का शीर्षक है **आज नहीं तो कल**|

- इस दुनियां में आएं हैं तो जीना ही पड़ेगा चाहे जहर हो या अमृत हम को पीना ही पड़ेगा पर हर वक्त हमारे जीवन में ऐसा नहीं होता है | कुछ लोग अपने सिरे से जी कर हम को यह दिखा देते हैं कि जीना इसी का नाम है तब हम उन के सिद्धांतों पर यकीन करते हैं | **जीना इसी का नाम है** की कहानी भी कुछ ऐसी ही है |
- पुत्रियां और पुत्र जब विवाह के बाद माँ बाप का घर छोड़ देते हैं तो उन को बहुत वेदना सहना पड़ता है लेकिन जब उन में समझदारी उत्पन्न हो जाती है और वे लौट आते हैं तो माता पिता का सीने में एक ऐसी ठंडक मिलती है कि उस का वर्णन करना हर एक इंसान के लिए सहज नहीं होता | **आ लौट के आजा मेरे लाल** कि भी यही कहानी है |
- प्यार को हम चाहे एक बंधन समझे या एक पवित्र भावना माने पर प्यार तो प्यार ही होता है जब बंध गए तो बंधन में हैं पर जब प्यार के पवित्र रिश्ते हो जाएँ तो जीवन सफल हो जाती है | इन भावनाओं को जो प्रदर्शित करती है उस कहानी का शीर्षक है **प्यार का बंधन**|
- साजन और सजनी का प्यार तो माना जाना पद्धति है पर जब साजन पडोसी के जाल में फंस जाए तब सजनी का क्या हैं होता है? इस व्याख्याय को भी **साजन की पड़ोसन** में जरा ध्यान से पढ़ लीजिए |
- **प्रीत किये सुख होय** तो एक सत्य बचन है जिस को कोई भी मानव को मिथ्या साबित करना बहुत कठिन है | लेकिन अगर इस की विपरीत कुछ हो गयी तब तो हमारे जीवन में दुःख ही दुःख मंडराते रहेंगे |
- इस आधुनिक ज़माने के कुछ नए वर्ग के नौजवानों और नवयुवतियों को सभ्यता के आग में जलने का शौक हो तो वे बिछल और फिसल जाते हैं | दुनियां के अँधेरे में क्या कलियाँ

खिलती हैं जरा इस अंतिम कथा में पढ़ लीजिए | **उजाले की परी अधेरे की कली |**

- **अपहरण** एक कहानी है जिसमे समाज में बुरे से बुरे लोगों की घृणित व्योहार और हाल दिखाई गयी है |
- **अपराधी कौन** की कहानी ही अलग है जिस में आप को अपराधी की सजा को निर्धारित करना है |
- **गावं की दिवाली** एक भक्ति भाव का नमूना है और साधारण धार्मिक व्योहार का चर्चा है |

अन्त में मैं अपना सादर सप्रेम वंदना और प्रणाम आदरणीय पंडित हेमन्त विमल शर्मा को भेंट करता हूँ जिन्हों ने इस प्रकाशन का भूमिका लिख कर हम को और हमारे पाठकगण को कृतार्थ किया है | उनकी सलाह और इस अनुराग में उनकी यथा शक्ति सुधार करने की चेष्टा का हम सराहना करते हैं | पंडित जी के सहयोग, आशीर्वाद और असीम कृपा से हमारी यह पुस्तक प्रकाशित हो पायी है |

विषय सूची

१. त्याग २. करीना का कमाल ३. प्रीत की रीत ४. गुलाबो की कौशल ५. तकदीर की लकीर ६. आज नहीं तो कल ७. जीना इसी का नाम है ८. लौट के आज मेरे लाल ९. प्यार का बंधन १०. साजन की पड़ोसन ११. प्रीत किये सुख होये १२. उजाले की परी अँधेरे की कली १३. अपहरण १४. अपराधी कौन १५. गावं की दिवाली १६. उपसंहार १७. परिचय या पहचान

१

त्याग

यह बात बहुत पुरानी है पर जानी पहचानी है ।
यह मेरे एक दोस्त मोहन की कहानी है ।
उस ने अपने जीवन में बहुत कुछ ठानी है ।
चलो मिल कर देखें वह कितना ज्ञानी है ।

मेरे मित्र का जनम उस समय हुवा था जब देश में विलायती सत्ता चलता था । मोहन के माता पिता हीरा लाल और जसवंती भारत से एक गुलामी प्रथा के झपेट में पड़ गए थे और कठिन गुलामी निभाने के बाद अपनी जमीनदारी में लग गए थे । अपने मेहनत से हीरा लाल एक सफल जिमींदार के अलावे एक होनहार वकील भी बन गया था ।

जसवंती के गृहस्थी के हुनर लाजवाब थे इसीलिए वो अपने दोनों बेटों मोहन और जोहन की परवरिश बड़े शौक से और प्यार से की थी जिस पर सभी रिश्तेदार और समाज को नाज था । धीरे धीरे पूरा परिवार अपने अपने कार्यों में सन्लग्न हो गया था और सब कुछ सुचारू रूप से चल रही थी । हीरा लाल अपने बेटों के मदद से और अपने मजदूरों के सहायता से एक तरफ खेती बारी सँभालते थे और दूसरे ओर अपने वकालत का जिम्मेदारी भी बड़े सहूलियत से निभाते थे । समाज में उनका बड़ा मानजान था । मोहन अकसर अपने खेतों खलिहान से छुट्टी मिलने पर अपने पिता के दफ्तर में भी अपना सहयोग देता रहा । देश में ब्रिटिश राज की स्थापना से जनता को कुछ भरोसा हो गया था कि जिस पूंजीपति व्यवस्था के जरिये गुलामी की प्रथा रची गयी थी उन के दुःख और मनमानी करने के दिन खत्म होने वाले हैं और किसान सुख से अपना समय गुजार सकेंगे तथा उनको उनके सही मेहनत की कमाई मिलने लगेगी ।

सी. यस. आर. कंपनी किसानो से कोई चोरी नहीं कर सकेगी लेकिन इस आशा पर पानी फिर गया जब ब्रिटिश सरकार के सभी मुखिया कंपनी की ही बोली बोलने लग गए थे । सभी अंग्रेज चोर चोर मौसियात भाई

बन गए और अमलदार वर्ण-विद्वेष की मदिरा पीकर मतवाले बनते गए | अब अंग्रेजो के अत्याचार के सामने गरीब किसानो की कोई चलती ही नहीं रही और रहती भी कैसे क्यूंकि उनकी कोई वैसी मजबूत संस्था भी नहीं थी जिस से उनको सहारा मिलता |

हीरा लाल को कंपनी और सरकार के रवैये को देख सुन कर अपने देश लौट जाने का ख्याल आया पर न जाने क्या सोच कर वे यह चाह कर भी नहीं कर पाये | अपने मन में बड़ी बड़ी उमंगों को ले कर हीरा लाल परिवार अपने कर्मों में निसंकोच लगे रहे | लेकिन वहां का हाल बेहाल होता गया | गरीबी, सूनापन, तड़प और असहाय बेइंसाफी से देश में हाहाकार मचने लगा था | हीरा लाल ने सोचा कि ऐसी दसा और ऐसे लोग कहाँ मिलेंगे जिनके जीवन ऐसे दीन, तन ऐसे क्षीण, मुख ऐसे मलीन और नयन ऐसे तेजहीन हो | उस वातावरण में सभी का दम घुट रहा था लेकिन जाएँ तो जाएँ कहाँ? कैसी दर्नाक अवस्था ! कैसा दारुण दृश्य ! पर सहने की शक्ति की आवश्यकता थी |

मोहन भी प्रगाढ़ चिंता में डूबा जा रहा था | उस का भी सर घूमने लगा और वह भी सब के तरह हाँथ मलने लगा | वह सोचता रहा क्या उसक| जीवन इसी मनहूस देश में बीतेगा ? इन सब मुसीबतो के बावजूद लोग अपने अपने काम करते रहे शायद कभी न कभी कोई अच्छे दिन देखने के लिए | भावी बड़ी बलवती होती है |

हीरा लाल ने एक दो और जमीन ख़रीद ली और उनके अन्य परिवार भी उस में उनके साथ खेती करने लगे | वे अब एक अच्छे खासे जमींदारी के मालिक बन गए थे | हीरा लाल के सामने एक अत्यंत पेचीला सामाजिक प्रश्न आ खड़ा हुवा | उस बिरादरी में ज्यादा ब्राह्मण और क्षत्री लोग रहते थे |

कोई महाराज था तो कोई सिंह कहलाता था पर हीरा लाल के पास कोई ऐसी उपाधि नहीं थी | गावं के लोग उनको बिरादरी में शामिल करने से इंकार कर दिया | पंचायत बैठी और उस में यह निर्णय लिया गया की हीरा लाल को एक बड़ी प्रायश्चित करनी पड़ेगी और गावं के ब्राह्मणो को और राजपूत भाइयों को भोजन करा के उन को दान देना होगा |

हीरा लाल ने सब से माफ़ी मांगते हुए बतलाया कि जहाज में आते समय न कोई ब्राह्मण रह गया है न कोई क्षत्री कहलाने योग रहा तथा अब हम सब एक सामान हैं | लेकिन गल थेथरई की भी कोई हद्द नहीं होती इसलिए

किसी ने उनकी बातो पर ध्यान ही नहीं दिया | हीरा लाल परिवार को अछूत मान लिया गया और गावं से छांट दिया गया |

मोहन उस समय एक होनहार नौजवान था और इन अपमानजनक बातें उस के आत्मसम्मान पर बहुत बड़ी चोट पहुंचाई जैसे उसको हजार गोजरों ने काट लिए हो | मोहन के ह्रदय में एक तरफ कंपनी और सरकार की सभी बेइंसाफियां और डकैती का बोझ असहाय होती जाती थी और अब दूसरे तरफ समाज के झूठे ठेकेदार उन पर गजब ढा रहे थे |

मोहन का शरीर क्रोध से थर थर काँप रहा था और आँखों में लहू उतर आया था | ऐसा घोर अपमान सहने के लिए वह बिलकुल तैयार ही नहीं था क्यूंकि उस ने अपने शास्त्रों में पढ़ रखा था कि जुल्म सहना और जुल्म करना दोनों अधर्म के लक्षण हैं |

देश और समाज के ऐसे घोर अपमानों को सहन करना बहुत मुश्किल हो रहा था | सरकार और कंपनी के लिए किसान सब कमजोर थे और इसीलिए उनको मनमानी लूटी जा रही थी और उन समाज के नर-पशुओं ने मोहन के परिवार को हीन समझ रखा था | यह मोहन का धरम संकट था |

वह सोचने लगा- क्या हमारा संस्कार श्रेष्ट नहीं है ? क्या हमारा रहन सहन उनके बराबर नहीं है ? क्या हमारा आचार विचार उनसे उत्तम नहीं हैं ? मोहन के दिमाग में बार बार यही सवाल आते रहे | यदि किसी भी न्यायधीश के सामने यह मामला पेश किया जाए तो वह हमारा रूप-रंग, आचार-विचार, शिक्षा-संस्कार और चाल-ढाल देख कर क्या फैसला करेगा ? सरकार और कंपनी के लिए कौन ऊँचा है और कौन नीचा है कोई मतलब नहीं रखता है | वे तो सभी किसानो का मनमानी खून चूस रहे थे |

मोहन के विचार में लाखों शास्त्र की बाते घूमने लगी | क्या ये लोग वही बंसंज के हैं जहाँ श्री राम ने शबरी के जूठे बेर खाए थे और श्री कृष्ण ने विदुर की भाजी का भोग लगाया था तथा जहाँ पाराशर चण्डालिन से, वेदव्यास मल्लाहिन से और वशिष्ट गणिका के गर्भ से जन्म लेकर समाज में सर्वोपरि सम्मान के अधिकारी हुए थे?

मोहन को ख्याल आया कि मनुष्मृति स्पष्ट कहती है कि कर्म से शूद्र हो जाता है ब्राह्मण और ब्राह्मण बन जाता है शूद्र:

शुद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम् |
क्षत्रियाज्जात मेवंतु विद्याद्वैश्यात्तथैवा च ||

इस विषय पर गीता और वेदों में कई स्पष्टीकरण की गयी हैं जिनको पढ़ने के बाद मोहन तिलमिला उठा पर छोटी मुँह बड़ी बात हो जाती अगर समाज में मोहन कुछ सफाई पेश करता |

पर इस देश के लोगों कि बिडंबना तो देखो | इस संसार के विभिन्न लोगों की मिलावट ऐसी होती रही की हिंदुस्तानी कौम का कोई ख़ास चिन्ह नहीं रह गया है पर आज भी हम हिन्दुओं के लिए कोई नीचा है कोई ऊँचा है | वर्ण संस्कर्ता का इससे बड़ा मूरखता और कहाँ मिल सकता है जब लोग कहते हैं की सब बातों की एक बात | मानव कर्म से ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र कहलाता है पैदाइश से नहीं | धर्म के चार स्तम्भ हैं सत्यम, शिवम, सुंदरम ,ज्ञानं और यह सब गुण उन नर पशुओं के पास शायद ही होंगे | ऐसा सोच कर मोहन अपने कर्मों में लग गया |

हीरा लाल परिवार ने पंचों की धमकी को अनसुना कर दिया और उन्हों ने रुद्ध कंठ से कहा, "मैं कर्मवीर हूँ इसलिए मैं अपने कर्मों को करता रहूँगा और जब भी इस बिरादरी को मेरी जरुरत पड़े वो हम को अपने समाज में शामिल कर सकती है | फिलहाल मैं आप लोगों के फैसले को मान कर आगे बढ़ने की कोशिश करता रहूँगा |"

इन सब बातों को सब लोग तो सहन कर गए पर जसवंती के स्वाभाव और तंदुरुस्ती पर इस का प्रभाव बहुत बुरा हुवा और कुछ ही दिनों के बीमारी के बाद उनका देहांत हो गया | इस भयानक दुर्दशा से मोहन पर जैसे कोई बिजली गिर पड़ी हो | उस ने अपने सब से कीमती हीरा खो दिया था और वह सब समाज के कुकर्मों के कारण | मोहन ने उन समाज के ठेकेदारों को कभी माफ़ नहीं कर सका |

मोहन और हीरा लाल का सारे परिवार के रातों की नींदें हराम होने लगी थी | दिल में दर्द था और दिमाग में भयंकर तूफ़ान थे | लेकिन समय तो बलवान है और सुचारू रूप से चलता ही रहता है | कुछ दिनों के बाद हीरा लाल ने दूसरी शादी कर ली | मोहन पर उस के पिता के इस कदम से बहुत खेद हुवा पर वह चुप चाप सह गया | उस समय मोहन को जितना दुःख हुवा उसका अनुमान लगाना आम लोगों के लिए सरल नहीं है | मोहन को अपने पिता के इस कार्य से एक प्रकार की घृणा होने लगी थी और वे उसके दृष्टि से एसे गिरे कि फिर पिता पुत्र का रिश्ता सुधर नहीं सका |

उधर बिरादरी के लोग इस विवाह से खुश थे क्यूंकि हीरा लाल कि नयी दुल्हन एक ब्राह्मण की कन्या थी | क्या जमाना आ गया था एक समय

का समाज का छांटा हुवा हीरा लाल आज फिर बिरादरी में शामिल हो गया और अपने घर-गृहस्थी सुचारू रूप से चलाने लगा।हीरा लाल के नयी पत्नी आरती से उस के दो बच्चे भी हुए । एक लड़की, कमला और एक बेटा, नरेश ।

अब मोहन और जोहन के जीवन में बदलाव आने लगा क्यूंकि उनका रहन सहन अब सौतेली माँ के पाले पड़ गया था । कुछ अपवादों को छोड़ कर विमाता चाहे कितनी ही सुलक्षण और दयावती ही क्यों न हो, अपने सौत की सन्तान पर उस का उतना सच्चा और गहरा स्नेह का भावना दर्शाना बहुत ही मुश्किल होता है ।

पुरुष चाहे कैसा भी चतुर, सुजान और विद्वान क्यों न हो नवेली दुल्हन को पा कर उस के बस में हो ही जाता है तथा उसके नखरे पर उसी तरह नाचने लगता है जिस तरह नट के इशारे पर मर्कट । अगर पुरुष कही हिरा लाल के तरह अधेड़ बूढा हुवा और पत्नी हुयी नयी नवेली तब तो बस यही समझिए कि एक तो कडुवा करेला जिस पर नीम रस पड़ गया हो ।

और फिर कहीं नयी दुल्हन खूबसूरत हुयी, उस के आँखों में बिजली की चमक हुयी और चहरे पर जवानी की लाली तब तो वह अपने पति-पुजारी की आराध्य-देवी बनकर रहने लगती है । वह घर में रानी का रुतबा पा जाती है और सभी पर रौब जमाती तथा हुकुम चलने लगती है । उस की हर एक बात पति देव के लिए ब्रह्म रेखा हो जाती है जो कभी मिट ही नहीं सकती है । उस के हावभाव एवं चोंचलेपन पर बूढा पति वैसे ही जान देने लगता है जैसे चिराग के लौ पर पतिंगे । वह अपने स्वर्गीय पत्नी के बच्चों के साथ केवल दुर्व्योहार ही नहीं करता बल्कि अपनी नयी नवेली को प्रसन्न रखने के लिए बच्चों पर अत्याचार भी करने लगता है । सुनने कहने में यह बाते जरा कड़वी लगती हैं पर यह सोलह आने सच्ची हैं ।

मोहन स्वयं इस दुखद स्तिथि का अनुभव कर चूका था और अब उस के जीवन में एक ऐसा पारिवारिक तूफ़ान आ खड़ा हुवा था जिसका उसको कभी ज्ञांत भी नहीं था । लेकिन मोहन अपने सभी दुःख भूलने के लिए तुलसी-कृत रामायण पर अपना अनुराग रख कर उस का पाठ करने लगा था । फिर सूरदास के पदों पर भी उसकी बड़ी भक्ति हो गयी थी । इन सब से मोहन के ह्रदय-सितार के तार तार बज उठते थे और उस की आत्मा भगवत भक्ति में तल्लीन हो जाती थी ।

मोहन के पिता हीरा लाल मोहन को हमेशा खिन्न और उदास देख कर चिंतित होते थे । वे मोहन के मनोव्यथा से परिचित थे और जानते थे कि

उन के व्यवहार से मोहन के भावुक ह्रदय में ऐसा गहरा घाव हो गया था कि वह जीवन में कभी नहीं भर सकता था | पर इस प्रकार मोहन का घुल घुल कर जीना हीरा लाल के अंतरआत्मा के लिए अत्यंत दुःख दायक बात थी | इसीलिए हीरा लाल मोहन को फ़ौरन किसी ऐसे काम में लगा देना चाहते थे जिस से मोहन कि तल्लीनता मिट जाय और उसका ध्यान बट जाए | आखिर में हीरा लाल ने मोहन को जमींदारी के झंझटों में फंसा दिया और मोहन पर जिम्मेदारियों का इतना बोझ लाड दिया गया कि वह उन के भार से दब सा गया था |

जमींदारी के अलावे मोहन को हीरा लाल के वकालत के दफ्तर का भी संचालन करना पड़ता था | अतएव मोहन काम काज में इतना व्यस्त रहने लगा कि उस को दम लेने की फुरसत नहीं रहती थी |

यह सब बाते मोहन के लिए अच्छी ही हुईं | इन से जहाँ मोहन को अपने अपमान की बातें सोचकर सन्ताप करने का अवसर नहीं मिलता था वही दफ्तर में जा कर अन्य लोगों के दुःख तकलीफ का पता चल जाता था | किसान अक्सर कम्पनी की शिकायत ले कर मोहन के पास आया करते थे | किसी ने दो सौ टन गन्ना कंपनी के मिल भेजा पर उस को पैसा मिलने के जगह वापस कम्पनी के कुछ कर्ज भरने को कहा गया क्यूंकि किसान के गन्ना में बहुत मैला था इस लिए चीनी सब मलासीस हो गया और मिल की सफाई करने के लिए कम्पनी को बहुत खर्चा करना पड़ा | किसी किसी किसान को दो साल हो जाते उनको अपने गन्ने का कोई पैसा ही नहीं मिलता था | इन सब दुर्दशा से बचाओ के लिए कोई किसानो का सहयोग संस्था तो था नहीं इस लिए कम्पनी मनमाना करती जा रही थी और किसानो को लूटती जा रही थी |

उधर दुकानदार जो किसानो के परिवार को कर्जे पर घर को चलाने के लिए खाना कपडा देती थी उस का हिसाब भी दुकानदार मनमानी बना लेते थे | जब कोई किसान केवल चीनी खरीदता तो हिसाब में नमक भी लिखा जाता था | या जब कोई आलू ले गया तो उस के हिसाब में पियाज भी लिख लिया जाता था | इस तरह गरीब किसान और भी गरीब होते जा रहे थे और दुकानदार धनी होते जाते थे | एक तरफ कम्पनी की डकैती दूसरे ओर दुकानदारों की बेईमानी |

किसानों पर यह दोनों तरफ से जख्म-ज्यादती बढ़ती जाती थी और किसान बेचारे चुप चाप सहते जा रहे थे | मोहन और उस के कुछ साथियों ने किसानो के तरफ से क्रांति किये और किसानो का एक संस्था बनाया | जब किसान संगठित हुए और उन का मार्ग दर्शाने वाला संस्था बना तब उनका

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below